आज तुमने दुनिया के बारे में क्या सीखा?

प्रार्थना मुद्गल भोपाल में अँग्रेज़ी माध्यम के एक निजी स्कूल में सातवीं कक्षा की छात्रा है। वह अपनी दादी के बहुत क़रीब थी। मार्च में जब स्कूल बन्द हुए तब वह अपनी दादी के निधन से बस उबर ही रही थी। उत्तर भारत की गर्मी की तपिश में घर के अन्दर रहना शुरुआत में एक बड़ी राहत की बात थी। फिर स्कूल की अचानक हुई छुट्टियाँ किसे अच्छी नहीं लगतीं। लेकिन, जहाँ ज़्यादातर बच्चे छुट्टियों के आदी हो गए, वहीं प्रार्थना जल्द ही कुछ न कुछ करने के मौक़े ढूँढ़ने लगी। और उसने जो कर दिखाया वह वास्तव में उल्लेखनीय है। ख़ासकर यह देखते हुए कि जिन बच्चों के पास टीवी, लैपटॉप और फ़ोन की असीमित पहुँच होती है उनके लिए न केवल घण्टे या दिन, बल्कि सप्ताह और महीनों का समय बिता देना भी कितना आसान होता है।

प्रार्थना ने जो कर दिखाया है उसे वह असाधारण नहीं लगता है। उसके बारे में बात करने में भी वह थोड़ा संकोच करती है। लेकिन फिर भी हम प्रार्थना से उसके द्वारा लॉकडाउन की अवधि में किए गए कार्यों के बारे में कहलवाने में सफल रहे।

अपने अन्य स्कूली साथियों की तरह प्रार्थना भी मार्च में अपने स्कूल द्वारा शुरू की गई ऑनलाइन कक्षाओं में भाग लेने लगी। लेकिन वह लगातार जुड़ी नहीं रह सकी। धीरे-धीरे कम कक्षाएँ करने लगी और आगे चलकर उसने ऑनलाइन कक्षाओं से जुड़ना छोड़ दिया। उसके माता-पिता और शिक्षकों ने इस मामले पर चर्चा की। यह जानकर कि उसका कर्णावत प्रत्यारोपण (cochlear implant) उसके ऑनलाइन माध्यम से जुड़ने में बाधा बन रहा है, उन्होंने प्रार्थना के कक्षा छोड़ने के फ़ैसले का समर्थन किया। वे जानते थे कि सीखने के एक नए माध्यम का सामना करने की हताशा किसी अन्य भावनात्मक मुद्दे को जन्म दे सकती है।

कुछ करने की खोज में, प्रार्थना ने ऐसे मास्क बनाने का फ़ैसला किया जो उस समय तक आसानी से नहीं मिलते थे। एक ही दिन में उसने घर पर सिलाई मशीन चलाना और *यू-ट्यूब* की मदद से मास्क सिलना सीख लिया। आने वाले हफ़्तों में उसने घर में उपलब्ध कपड़े, धागे और इलास्टिक की मदद से दर्जनों मास्क बना डाले। इन मास्क की ज़रूरत एक पेट्रोल पम्प के कर्मचारियों को थी, जो राष्ट्रीय लॉकडाउन के दौरान भी आवश्यक सेवाओं के रूप में अपना कार्य कर रहे थे। जब उन्होंने मास्क के लिए पैसे देने चाहे तो प्रार्थना ने उन्हें और मास्क बनाने के लिए सामग्री लाने को कहा।

एक दिन प्रार्थना अपने पिता के साथ पड़ोस के मेडिकल स्टोर पर गई। उसने अपने पिता से कुछ सवाल पूछे। जैसे कि जब बाक़ी सभी लोग घर के अन्दर हैं तो मेडिकल स्टोर पर लोग काम क्यूँ कर रहे हैं, वे लोग खाना कहाँ खाते हैं और आराम कहाँ करते हैं। प्रार्थना को धीरे-धीरे इन बातों के प्रति जागरूक किया गया कि मेडिकल स्टोर के कर्मचारी हमारे जैसे सभी लोगों के लिए स्टोर खोलकर रखते हैं। वे सुबह 7 बजे से रात के 11 बजे तक बिना आराम किए कार्य करते हैं, यहाँ तक कि चाय की एक दुकान भी नहीं खुलती, जहाँ से उन्हें एक कप चाय मिल सके। प्रार्थना के पिता ने उससे कहा कि जैसे वे हमारी मदद कर रहे हैं, हमें भी उनकी मदद करनी चाहिए। उस दिन के बाद से प्रार्थना ने उनके लिए चाय बनाना शुरू कर दिया। हर दिन वह चाय बनाती और एक लीटर की बोतल में डालकर ले जाती। कभी-कभी तो वह अपने साथ बिस्कुट या नमकीन के कुछ पैकेट भी ले जाती थी।

रात में घर पर 40-50 अतिरिक्त रोटियाँ बनतीं जिन्हें वह आस-पड़ोस में रहने वाले कुत्तों को खिलाने जाती। सब मिलकर एक दिन में आस-पड़ोस की लगभग पाँच से सात कालोनियों में रोटियाँ बाँट आते। इन सब चीज़ों को करते हुए प्रार्थना संवेदनशील होने लगी। जब भी वह सड़क के किनारे किसी कुत्ते को देखती जो ख़ुद खा नहीं पा रहा हो या चल नहीं पा रहा हो तो वह तुरन्त अपने पिता को फ़ोन कर एम्बुलेंस बुलवाती। वह तब तक उस कुत्ते के साथ बैठी रहती जब तक एम्बुलेंस उस कुत्ते को अस्पताल नहीं ले जाती।

जैसे ही लॉकडाउन हटा और उसके पिता द्वारा संचालित एनजीओ ने काम करना शुरू किया, उन्हें हैंड सैनिटाइज़र की ज़रूरत पड़ी। यह उसकी अगली बड़ी परियोजना बन गई। उसने फिर से यू-ट्यूब का रुख किया और अपने घर में उग रहे ख़ूब सारे ऐलोवेरा और बाज़ार से ख़रीदी गई अन्य सामग्रियों जैसे कि स्पिरिट की मदद से लिक्विड हैंड सैनिटाइज़र बनाना सीखा। एनजीओ में आने वाले लोगों में हमेशा कुछ ऐसे लोग होते थे जो साबुन और सैनिटाइज़र पर ख़र्च नहीं कर सकते थे। उन्हें प्रार्थना के घर की रसोई में तैयार किया गया सैनिटाइज़र दिया जाता था।

क्या यह मान लेना सही होगा कि प्रार्थना सीखने में पीछे रह गई? कभी-न-कभी वह स्कूल में वापस आ जाएगी, अपनी क्लास डेस्क पर वापस आएगी, गुणा या कुछ और सीखने लगेगी। लेकिन कौन-सी कक्षा उसे हमेशा दूसरों का ख़याल रखना सिखाएगी? अपने समय का उत्पादक ढंग से उपयोग करना सिखाएगी? उन लोगों के लिए संवेदना रखना सिखाएगी जिनके पास कम सुविधाएँ हैं? हमारी सेवा करने वालों की सेवा करना सिखाएगी? लॉकडाउन एक सुनहरा अवसर था कि अभिभावक घर पर बच्चों के साथ मिलकर सही उदाहरण स्थापित करें, उन मुद्दों पर बात और चर्चा करें जो हमारे जीवन में सबसे महत्त्वपूर्ण हैं।

जैसा कि लर्निंग कर्व को बताया गया।